BA- Hindi

कार्यक्रम और पाठ्यक्रम के परिणाम

बी.ए कार्यक्रम के परिणाम निम्नलिखित हैं-

1. पाठ्यक्रम से विद्यार्थी हिंदी भाषा के उद्भव और विकास को जानेंगे।
2. इससे विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास की जानकारी प्राप्त होगी।
3. विद्यार्थी हिंदी साहित्य की आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल की विभिन्न काव्यधाराओं को समझेंगें।
4. इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों में काव्यशास्त्र, प्रयोजनमूलक हिंदी और कम्प्यूटर की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम उद्देश्य और पाठ्यक्रम परिणाम

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम उद्देश्य	पाठ्यक्रम परिणाम
1.	बी.ए. प्रथम सत्र	
	1. आदिकाल की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होगी **2.** भक्तिकाल के कवियों के पदों के आधार पर मध्यकालीन साहित्य को जाना जाएगा। **3.** रीतिकाल के कवियों को उनकी कविताओं के आधार पर जाना जाएगा। **4.** काव्यशास्त्र के नियमों को विद्यार्थी जानेंगे।	**1.** पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों को आदिकाल की गहरी जानकारी प्राप्त हुई। **2.** भक्तिकाल के रचनाकारों के माध्यम से विद्यार्थियों ने उस समय, साहित्य और भाषा को सीखा। **3.** रीतिकाल के पदों के माध्यम से विद्यार्थियों ने उस समय, साहित्य और भाषा को सीखा। **4.** प्रस्तुत पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों ने काव्यशास्त्र के बारे में जानकारी हासिल की।
2.	बी.ए. तृतीय सत्र	
	1. रीतिकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि, उसके नामकरण की समस्या का मूल्यांकन करना सीखेंगे।	**1.** रीतिकालीन साहित्य के सामान्य परिचय और उसके नामकरण की समस्या को जाना।

	2. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कविता का विश्लेषण एवं उनकी विशेषताएं जानेगें। 3. रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ समझेगें। 4. कम्प्यूटर – स्वरूप और महत्व, ई-मेल प्रेषण-ग्रहण, इंटरनेट की उपयोगिता को समझाने की चेष्टा की जायेगी। 5. अनुवाद का स्वरूप, प्रक्रिया, भेद, मशीनी अनुवाद को समझाया जायेगा।	2. रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त धाराओं का विश्लेषण करने एवं उसे उसकी प्रवृत्तिगत विशेषताओं के साथ समझा। 3. कम्प्यूटर के स्वरूप, महत्व, ई-मेल-प्रेषण-ग्रहण, इंटरनेट की उपयोगिता को समझा गया। 4. अनुवाद और मशीनी अनुवाद के स्वरूप, प्रक्रिया, भेद को समझाया गया।
3.	बी.ए. चतुर्थ सत्र	
	1. हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की परिस्थितियों का सामान्य परिचय सिखाया जायेगा। 2. हिंदी उपन्यास और कहानी का उद्भव और विकास पढ़ाया जायेगा। 3. हिंदी नाटक और निबंध का उद्भव और विकास पढ़ाया जायेगा। 4. पारिभाषिक शब्दावली का स्वरूप और महत्त्व, पारिभाषिक शब्द के गुण, पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के सम्प्रदायों का विस्तृत परिचय दिया जायेगा।	1. आधुनिक काल की परिस्थितियाँ एवं सामान्य परिचय सीखा गया। 2. हिंदी उपन्यास, कहानी, नाटक एवं निबंध का उद्भव एवं विकास समझाया गया। 3. पारिभाषिक शब्दावली का स्वरूप और महत्व, पारिभाषिक शब्द के गुण, निर्माण-प्रक्रिया में सहयोगी सम्प्रदायों का परिचय दिया गया।
5	बी.ए. पंचम सत्र	
	1. कवि अज्ञेय और प्रयोगवाद के अंत:संबंध को समझाया जायेगा। 2. धर्मवीर भारती, नरेश मेहता की काव्यगत विशेषताएं पढ़ाई जायेगी। 3. कवि नागार्जुन और प्रगतिवाद के अंत:संबंध को पढ़ाया जायेगा। 4. कवि रघुवीर सहाय और कुंवर नारायण, लीलाधर जगूड़ी की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला जायेगा। 5. भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी का आधुनिक हिंदी साहित्य में योगदान को बताया जायेगा। 6. छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, समकालीन कविता का सामान्य	1. हिंदी साहित्य के प्रयोगवाद और उसमें कवि अज्ञेय का योगदान सीखा। 2. धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, कुंवर नारायण, लीलाधर जगूड़ी की काव्यगत विशेषताओं के साथ उनके काव्य को समझा गया। 3. नागार्जुन और प्रगतिवाद के अंत:संबंध को जाना। 4. भारतेंदु युग, द्विवेदी युग का परिचय और उसके आधुनिक साहित्य के विकास में महत्व को जाना। 5. छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, समकालीन कविता का सामान्य परिचय एवं उसकी काव्यगत विशेषताएं सीखी।

	परिचय एवं उसकी काव्यगत विशेषताएं पढ़ाई जायेंगी। **7.** पत्र-लेखन, उसके स्वरूप-भेद, संक्षेपण, पल्लवन को प्रयोजनमूलक हिंदी के रूप में सिखाया जाएगा।	**6.** पत्र-लेखन एवं उसके स्वरूप-भेद, संक्षेपण, पल्लवन की भूमिका और उसके लेखन की प्रक्रिया को जाना।
6	बी.ए. षष्ठ सत्र	
	1. हिंदी निबंध का विकास और निबंधों के स्वरूप-भेदों पर चर्चा करते हुए बालमुकुंद गुप्त, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र इत्यादि की निबंध शैली को पढ़ाया जायेगा। **2.** हरिशंकर परसाई और व्यंग्य साहित्य का अंत:संबंध समझायेगे। **3.** यात्रावृत्तांत साहित्य में राहुल सांकृत्यायन का योगदान स्पष्ट किया जायेगा। **4.** हरियाणवी साहित्य का विकास और उसकी परम्पराएं, उसकी बोलियाँ, हरियाणवी कविता, गद्य साहित्य इत्यादि को सविस्तार पढ़ाया जायेगा।	**1.** हिंदी निबंध का विकास और निबंधों के स्वरूप-भेदों पर चर्चा करते हुए बालमुकुंद गुप्त, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र इत्यादि की निबंध शैली को सीखा। **2.** हरिशंकर परसाई और व्यंग्य साहित्य का अंत:संबंध एवं यात्रावृत्तांत साहित्य में राहुल सांकृत्यायन का योगदान स्पष्ट रूप से समझा। **3.** हरियाणवी साहित्य का विकास और उसकी परम्पराएं, उसकी बोलियाँ, हरियाणवी कविता, गद्य साहित्य इत्यादि को विस्तारपूर्वक सीखा।